आर एल ए समाचार

आप की आवाज आप तक

रामलाल आनंद महाविद्यालय, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | सत्र 2021–2022 | पृष्ठ 1–4

इनारा ने जीते पुरस्कार

नई दिल्ली। इनारा राम लाल आनंद महाविद्यालय की फाइन आर्ट्स सोसाइटी है, जिसने न सिर्फ महाविद्यालय के अंदर बल्कि दिल्ली विश्वविद्यालय में भी प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

टीम में कुल 32 सदस्य हैं जो कड़ी मेहनत, रचनात्मकता, सक्रिय भागीदारी के साथ समय–समय पर उपलब्धियां प्राप्त करते हैं।

सोसाइटी की सदस्य संजना कुमारी ने 1 सितंबर 2021 को बीएचयू की ओर से आयोजित वार्षिक भू–भौतिकी कार्यक्रम में प्रथम स्थान हासिल किया था। इससे कुछ दिन पहले संजना ने करियरनिंजा कैनवा की ओर से आयोजित ग्राफिक डिजाइनिंग प्रतियोगिता में भी चौथा स्थान प्राप्त किया था।

जून 2021 में यूथ इंडिया पंचगांव की ओर से आयोजित बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट स्पर्धा में मुस्कान गरचा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। निकिता पठानिया ने स्किल ग्रोथ फाउंडेशन की ओर से आयोजित राष्ट्रीय स्तर की पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया।

इनारा सोसाइटी ने जुलाई में फूड डूडल प्रतियोगिता भी आयोजित की थी, जिसमें श्रुति अग्रवाल ने प्रथम स्थान हासिल किया था।

एप्टीट्यूड टेस्ट सीरीज में उमड़े प्रतिभागी

प्रियंका

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग की ओर से 30 सितंबर को एप्टीट्यूड टेस्ट सीरीज आयोजित की गई। विभाग की शिक्षिका नूपुर त्यागी और मनीषा वाधवा अरोड़ा इसकी समन्वयक रहीं।

सीरीज में 60 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। लगभग सभी कंपनियां एप्टीट्यूड टेस्ट करती हैं। साथ ही कैंपस प्लेसमेंट के दौरान यह टेस्ट लिया जाता है। विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करने के मकसद से एप्टीट्यूड टेस्ट सीरीज़ का आयोजन किया गया था। उम्मीद है भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कराया जाएगा।

महात्मा गांधी प्रासंगिक हैं और रहेंगे

गांधी और विश्व शांति विषय पर 2 दिवसयीय अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन का आयोजन

अभिषेक

नई दिल्ली। दिल्ली विवि के रामलाल आनंद कॉलेज की गांधी स्टडी सर्किल सोसाइटी ने 'गांधी और विश्व शांति' विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। नौ सत्रों में आयोजित होने वाले इस सम्मलेन में देश–विदेश के 13 ख्यातिलब्ध वक्ताओं ने हिस्सा लिया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत करते हुए गांधी स्टडी सर्किल के संयोजक प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने आयोजन का उद्देश्य और विषय की रूपरेखा रखी। तत्पश्चात प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए महात्मा गांधी की वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर बात रखी।

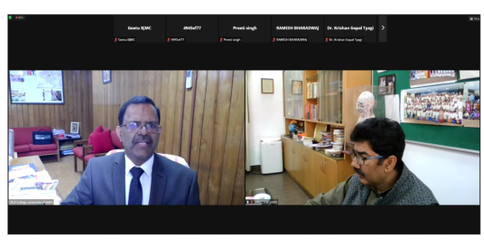

सत्र मुख्य अतिथि और स्मृति और दर्शन समिति के निदेशक डॉ. दीपांकर ज्ञान ने सोसाइटी के पहले संयोजक रहे स्वर्गीय डॉ. देवेंद्र कुमार को श्रद्धांजलि देते हुए सवाल किया कि गांधी क्यों? उन्होंने बताया कि गांधी वैश्विक शांति के पथ प्रदर्शक हैं। सत्र के मुख्य वक्ता गांधी भवन दिल्ली विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. रमेश भारद्वाज ने सोसाइटी के कार्यों की प्रशंसा करते हुए वैश्विक शांति में गांधी के योगदान को बेहतर तरीके से रेखांकित किया।

अगले सत्र में वियना विश्वविद्यालय के प्रो. जियानलुइगी सेगलेरबा ने व्यक्ति की नैतिक नींव के लिए गांधीजी की खोज विषय पर बात रखते हुए गांधीजी के जीवन पर गीता के पड़ने वाले प्रभाव के बारे में विस्तार से चर्चा की। कैलिफोर्निया विवि के प्रो. मार्क जुएर्जेन्समेयर ने आतंकवाद और गांधीवादी दृष्टिकोण विषय पर बोलते हुए हिंद स्वराज के निर्माण और भारत में सत्याग्रह जैसे आंदोलनों के महत्व के बारे में बताया। प्रो. डगलस एलन ने कहा कि हम भारत और विश्व में वैश्विकता, शांति और अहिंसा के मुद्दों पर गांधी के विकेंद्रीकरण और अहिंसक शांति पर कैसे ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। दो दिवसीय सम्मलेन का संयोजन कर रही डॉ. प्रज्ञा देशमुख ने दूसरे दिन वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सत्र की शुरूआत की। प्रथम वक्ता के तौर पर मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलेपमेंट स्टडीज के प्रो. अनंत गिरी ने गांधी के साथ चलना और ध्यान करना सत्य, ईश्वर, न्याय और : अहिंसा विषय पर बात रखते हुए बताने की कोशिश की कि कैसे सत्य, अहिंसा और ईश्वर परस्पर जुड़े हुए हैं।

गांधीवादी लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. सुजाता चौधरी ने गांधी की जरूरत क्यों? विषय पर बोलते हुए देश, समाज और मनुष्य के आसपास रोज घटने वाली घटनाओं से आज के समय में गांधी की प्रासंगिकता पर बल दिया। गांधी इन्फार्मेशन सेंटर बर्लिन के निदेशक प्रो. क्रिश्चियन बार्टोल्फ गांधी आइंस्टाइन–श्वीटजरः अहिंसक प्रतिरोध और परमाणु युद्ध पर बात रखते हुए आइंस्टीन द्वारा गांधी जी को भेजे गए कई पत्र भी प्रस्तुत किए।

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के पूर्व महानिदेशक और लेखक डॉ. राकेश तिवारी ने सफर के सबक विषय पर बोलते हुए पूरे घुमक्कड़ शास्त्र, गौतम बुद्ध, राहुल सांकृत्यायन से जोड़ते हुए महात्मा गांधी की घुमक्कड़ी का विस्तार से बखान किया।

समापन सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैम्पस के निदेशक प्रो. प्रकाश सिंह ने गांधीवादी मूल्यों के बारे में विस्तार से बताया। प्रो. डीपी सकलानी ने गांधी के बताए तौर तरीकों पर अमल करने पर जोर दिया। समापन सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैम्पस के निदेशक प्रो. प्रकाश सिंह ने गांधीवादी मूल्यों के बारे में विस्तार से बताया। प्रो. डीपी सकलानी ने गांधी के बताए तौर तरीकों पर अमल करने पर जोर दिया। इन सभी सत्रों में देश और विदेश में विभिन्न संस्थानों से जुड़े करीब दो दर्जन प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए, जिन्हें विद्वान वक्ताओं ने सराहा।

सोसाइटी के सह संयोजक और हिंदी विभाग के प्रो. संजय कुमार शर्मा ने अतिथियों, वक्ताओं, प्रतिभागियों सहित आयोजन से जुड़े सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

सफलता का कोई आसान रास्ता नहीं हो सकता

चेतना काला

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की अस्मिः लैंगिक अस्मिता संवेदीकरण समिति की ओर से 8 अक्टूबर 2021 को राइजिंग अबव जेंडर रोल विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार की वक्ता अंतरराष्ट्रीय तैराक और नारी शक्ति पुरस्कार विजेता डॉ. मीनाक्षी पहूजा रहीं।

वेबिनार की शुरुआत समिति संयोजक डॉ श्रुति आनंद ने डॉ. मीनाक्षी का स्वागत करके किया। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने लैंगिक अस्मिता पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि जीवन में किसी प्रकार की सफलता का कोई आसान रास्ता नहीं होता। समाज बदल रहा है। आज स्त्री और पुरुष के लिए बहुत से अवसर उपलब्ध हैं जिनको उन्हें प्राप्त करना चाहिए।

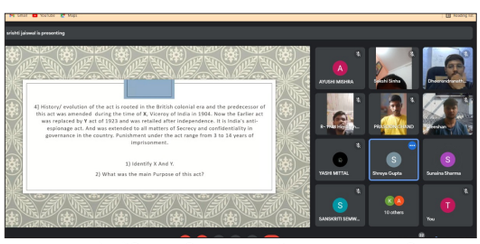

मीनाक्षी पहूजा की स्कार स्विमिंग 2017 की एक वीडियो भी दिखाई गई, जिसके जरिए सबको यह देखने का मौका मिला कि कितनी चुनौतियों का सामना करने के बाद वो पहली ऐसी भारतीय बनीं जिसने स्कार स्विमिंग में देश का प्रतिनिधित्व किया। डॉ. मीनाक्षी ने ओलंपिक में महिलाओं की उपस्थिति पर बात करते हुए कहा कि आज महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने खेल जगत को नए मुकाम पर पहुंचाया है। अंत में पेपर प्रस्तुति प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए, जिसमें पहला स्थान कॉलेज के विद्यार्थी विकास त्रिपाठी को मिला, दूसरे स्थान पर अग्रसेन कॉलेज की वैशाली सक्सेना रहीं। तीसरे स्थान पर श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के नितेश गोयल रहे।

गदर टू गणतंत्र स्पर्धा

गीतू कत्याल

नई दिल्ली। आरएलए के इतिहास विभाग की सोसाइटी 'तवारीख' ने 21–22 सितंबर 2021 को अंतरमहाविद्यालय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य पर आयोजित की गई थी। प्रतियोगिता का विषय 'गदर टू गणतंत्र' रखा गया था, जिसमें 1857 से 1950 तक के प्रश्न पूछे गए थे।

प्रतियोगिता का पहला राउंड गूगल फॉर्म के माध्यम से लिया गया था। 80 प्रतिभागियों में से 6 प्रतिभागियों के बीच दूसरा और फाइनल राउंड गूगल पर हुआ। दूसरे दिन के कार्यक्रम का संचालन तवारिख सोसाइटी की अनन्या शर्मा ने किया। प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का परिणाम शिक्षिका शची मीना ने घोषित किया, जिसमें आरएलए के प्रसून चंद ने पहला, देशबंधु कॉलेज के जीशान अली ने दूसरा और देशबंधु कॉलेज से हिमांशु कुमार ने तीसरा स्थान हासिल किया।

बदलाव के दौर का दस्तावेज़

प्रो. राकेश कुमार

आर.एल.ए. समाचार का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। समाचार पत्र का यह अंक दरअसल कोरोना काल के समय की गतिविधियों का है। हम जानते हैं कि कोरोना महामारी ने देश–दुनिया को इस प्रकार प्रभावित किया कि दुनिया एक प्रकार से रुक सी गई थी। हम जिस प्रकार से मुक्ति से जीने के आदी थे उस पर एक प्रकार से रोक लग गई थी। सभी जगह भय, अनिश्चितता और निराशा का वातावरण बना हुआ था। किसी को यह समझ नहीं आ रहा था कि भविष्य का स्वरूप कैसा होगा। शिक्षण, परीक्षा, सेमिनार, प्रतियोगिताएं तथा अन्य अकादमिक गतिविधियों पर जैसे अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया। ऐसे में इंटरनेट ने पूरी दुनिया को राह दिखाई। शिक्षण और परीक्षा से लेकर सब कुछ ऑनलाइन हो गया। यह अनुभव कुछ नया तो था पर इस प्रयोग ने यह दिखाया कि मनुष्य तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवन की नई राहें खोल लेता है। वास्तव में उसकी जिजीविषा और परिवर्तन के स्वीकार की शक्ति उसके अभी तक धरती पर बने रहने की कुंजी है। आर.एल.ए. समाचार का यह अंक वास्तव में हमारी इसी शक्ति का आईना है। हमारे विद्यार्थियों ने रामलाल आनंद महाविद्यालय के नवीन परिस्थितियों में ढलने की यात्रा को जैसे इस समाचार पत्र में संजो लिया है। आशा है समाचारपत्र का यह अंक आप सभी को अच्छा लगेगा।

सफल वैक्सीनेशन की कड़ी बने युवा

विकास त्रिपाठी

एक साल पहले भारत ने को. विड–19 के खिलाफ अपनी करीब 1.38 अरब आबादी का टीकाकरण करने की चुनौती पूर्ण यात्रा शुरू की। अब तक देश में 90 प्रतिशत पात्र आबादी को पहली खुराक और 60 प्रतिशत को दूसरी खुराक लग चुकी है। इसके अतिरिक्त, फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं और 60 वर्ष से अधिक आयु के कमजोर व्यक्तियों को बूस्टर शॉट्स दी जा रही है।

16 जनवरी 2021 को वैक्सीन की पहली खुराक दी गई थी। वैक्सीन के मौजूदा स्तर पर पहुंचने के लिए देश वैक्सीन 'हेजिटेशन' और वैक्सीन की कमी दोनों से जूझ चुका है। लेकिन इनसे भी बड़ी समस्या थी भारत की आबादी। करीब 1.38 अरब की आबादी को वैक्सीन देना, वह भी तब जबकि देश के विभिन्न हिस्सों में लॉकडाउन और पाबंदियां लगी हों।

इस समस्या से लड़ने में भारत के युवाओं का योगदान सबसे महत्वपूर्ण रहा। भारत की आबादी का 67.27 प्रतिशत 15–64 वर्ष के बीच है। भारत में 18 से 45 वर्ष की आयु वर्ग को 1 मई 2021 से वैक्सीन लगना शुरू हुआ। 11 जून 2021 को रायटर्स की एक रिपोर्ट बताती है कि किसी प्रकार यदि इस आयु वर्ग के लोगों को वैक्सीन नहीं लगाई जाती तो कोरोना की अगली लहर भयावह हो सकती थी। रिपोर्ट के मुताबिक 18–45 वर्ष के बीच 596 मिलियन लोग आते हैं। यह अन्य सभी आयु वर्ग की तुलना में बेहद अधिक हैं। आज इस वर्ग के लोगों की जागरूकता और राष्ट्र प्रेम का कारण है कि भारत की आबादी का 90 प्रतिशत हिस्सा पहली डोज ले चुका है।

पिछले एक साल में भारत में आपातकालीन उपयोग के लिए आठ कोविड–19 टीकों को मंजूरी दी गई थी। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया का कोविशील्ड, भारत बायोटेक का कोवैक्सीन, रूस का स्पुतनिक वी, मॉडर्न, जॉनसन एंड जॉनसन की सिंगल डोज वैक्सीन, जायडस केडिला का जायकोव–डी, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया का कोवोवैक्स और बायोलॉजिकल ई का कोरबे वैक्स। हालांकि कोविशील्ड और स्वदेशी रूप से विकसित कोवैक्सीन भारत के टीकाकरण अभियान की रीढ़ रहे हैं। जबकि स्पुतनिक वी भारत में उतारने में विफल रहा, जायकोव–डी का अभी तक रोल आउट नहीं किया गया है।

इस बीच मॉडर्ना भारतीय बाजार में प्रवेश नहीं कर पाई है क्योंकि अभी तक कोई समझौता नहीं हुआ है। यूं तो भारत की प्रमुख वैक्सीन निर्माता कंपनी सीरम इंस्टिट्यूट के पोस्टर बॉय के रूप में भी हमने अदार पूनावाला को देखा, लेकिन इनके अलावा भी देश को कोरोना से बचाने में डाक्टर, फार्मासिस्ट, नर्सिंग स्टाफ और सैनिटरी कर्मचारियों का योगदान अमूल्य रहा।

भारतीय युवाओं का योगदान केवल वैक्सीन लेने तक सीमित नहीं है। भारत में कोरोना से लड़ने में भी युवाओं का विशेष योगदान रहा है। यहां के हेल्थकेयर कर्मचारियों विशेष कर आशा–एएनएम को देश के वैक्सीनेशन अभियान का विशेष उपहार माना जाना चाहिए। युवा आशा बहनों ने सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में घर–घर जाकर लोगों को वैक्सीन लगाने अथवा लगवाने का काम किया। इन सभी कर्मचारियों का योगदान रहा कि भारत के गांवों में वैक्सीन को लेकर फैल रही अनेकानेक अफवाहों पर विराम लगा। यदि भारत में वैक्सीनेशन अभियान सफल रहा तो इसका प्रमुख कारण भारतीय युवा हैं।

राज्यों के विस चुनाव और डिजिटल प्रचार

2019 में कोरोना के आवागमन के साथ ही हमारी जिंदगी में बदलावों का आना शुरू हो गया। बीमारी की दो लहरों ने हमें ऑनलाइन ढकेल दिया तो इस तीसरी लहर ने ऑनलाइन दुनिया में एक नया आयाम दिखाया, जो है ऑनलाइन प्रचार।

2022 में पांच राज्यों के चुनाव होने थे। सबको यह आस थी कि नए साल में प्रवेश करने के साथ ही हमारा जीवन पटरी पर लौटेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नए साल के साथ भारत में एक नए वेरिएंट ओमिक्रोन ने कदम रखा। साथ ही निर्वाचन आयोग ने उत्तर प्रदेश, गोवा, उत्तराखण्ड, पंजाब और मणिपुर में विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान किया। निर्वाचन आयोग अपनी पुरानी गलतियों को दोहराना नहीं चाहता था, इसलिए चुनाव के दौरान निर्वाचन आयोग ने सभी प्रकार की रैलियों पर बैन लगा दिया और वर्चुअल रैली को प्रोत्साहन दिया।

अभिषेक उपाध्याय

राजनीतिक दल, कोरोना काल के दौरान हुए बिहार और बंगाल चुनावों में कुछ हद तक डिजिटल प्रचार की सहायता ले चुके थे, पर प्रचार को पूरी तरह ऑनलाइन सीमित रखना उनके लिए भी कुछ नया अनुभव था। ऐसे में प्रत्याशी डिजिटल प्रचार को प्रभावी बनाने में लगे रहे। फेसबुक व वाट्सएप जैसे सोशल मीडिया पर उनके हाथ जोड़कर वोट मांगते हुए फोटो देखे जा सकते थे। कुछ प्रत्याशी शार्ट वीडियो भी बनवा कर डालते रहे। इसके अलावा जनसंपर्क अभियान को फेसबुक पर लाइव चलाते रहे।

समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी व राष्ट्रीय लोकदल के प्रत्याशी भी मतदाताओं तक पहुंचने के लिए यही तरीका अपनाते रहे। सभी ने एजेंसी और आइटी प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं की मदद लेकर सोशल मीडिया पर अपना किया। डिजिटल प्रचार के कारण दलों की पहुंच आम लोगों तक हुई। लोग अपनी 5. 5 इंच की स्क्रीन पर नरेन्द्र मोदी, प्रियंका गांधी, अखिलेश यादव समेत अन्य नेताओं को सुन सकते थे। इस बदलाव से दलों के कुछ हद तक खर्चे कम हुए। साथ ही उनकी पहुंच बढ़ी। अब वह पार्टी कार्यालय में बैठकर दूरदराज क्षेत्र तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं।

शादी की उम्र बढ़ाने का फैसला सराहनीय

चेतना काला

भारत के कुछ ग्रामीण इलाकों में आज भी बाल विवाह जैसी रूढ़िवादी प्रथाएं जीवित हैं। अगर आप गांव की जड़ों से जुड़े हुए हैं तो हो सकता है कि बीते वर्षों में इस तरह का कोई मामला आपके संज्ञान में आया हो। नेशनल हेल्थ फैमिली सर्वे–5 में पाया गया है कि भारत के ग्रामीण इलाकों में हर चार में से एक लड़की का बाल विवाह कर दिया जाता है। हालांकि पहले की अपेक्षा बाल विवाह की संख्या में कमी आई है। सर्वे में पाया गया कि साल 2015–16 में 18 साल से पहले होने वाली लड़कियों की संख्या 27 प्रतिशत थी, जिसमें साल 2020–21 में 27 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई है। नेशनल हेल्थ फैमिली सर्वे के मुताबिक एनीमिक महिलाओं का प्रतिशत 53.1 से बढ़कर 57 प्रतिशत हो गया है। एनीमिक किशोर लड़कियों का आंकड़ा भी 54.1 प्रतिशत से बढ़कर 59.1 प्रतिशत तक पहुंच गया। इसके अलावा यूनिसेफ की एक स्टडी 'कोविड–19 बाल विवाह के खिलाफ प्रगति के लिए खतरा' ने चेतावनी देते हुए कहा है कि महामारी के कारण भारत में एक करोड़ से ज्यादा बाल विवाह के मामले सामने आ सकते हैं।

बाल विवाह की इस जटिल समस्या का हल करने की ओर भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। सरकार ने लड़कियों के लिए शादी की उम्र को 18 से बढ़ाकर 21 साल करने का फैसला किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं की शादी की उम्र बढ़ाने के फैसले के पीछे उन्हें स्वस्थ बनाना और कुपोषण से बचाना बताया। इस मामले में टास्क फोर्स गठित किए जाने के बारे में जानकारी देते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2020–21 के अपने बजट भाषण में कहा था कि 1978 में शारदा एक्ट 1929 में बदलाव करते हुए महिलाओं की शादी की उम्र 15 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष की गई थी। सरकार के इस फैसले के बाद लड़का–लड़की दोनों की शादी की उम्र समान हो गई। यह कदम अपने आप में अविश्वनीय रहा। अन्य कई निर्णयों की तरह यह भी हवा के झोंके की तरह आया। हालांकि प्रधानमंत्री ने इसका जिक्र अपने पहले के भाषणों में किया था। इस फैसले पर लोगों की मिली जुली राय सामने आई। इसके वास्तविक परिणाम भविष्य के गर्भ में हैं।

इस विषय पर चर्चा करते हुए यह समझना भी जरूरी है कि सभी धर्मों में शादी को लेकर अलग–अलग मान्यताएं और नियम हैं। हिंदुओं के लिए हिंदू मैरिज एक्ट 1955 है, जिसके तहत महिलाओं के लिए शादी करने की उम्र 18 साल है और पुरुषों के लिए 21 साल है। इस्लाम के तहत उस नाबालिग की शादी भी की जा सकती है जो यौवन अवस्था में प्रवेश कर चुकी हो। नया कानून बेशक लड़कियों को लड़कों के समान समय दिया है। गांव देहात में जहां आज भी काफी लड़कियों की शादी 16 या 17 की उम्र में करवा दी जाती है, वहां भी बदलाव देखने को मिल सकते हैं। पर, हम यह भी नजरंदाज नहीं कर सकते कि गरीब परिवार अपनी बेटियों को जल्द से जल्द विवाहित देखना चाहते हैं। इसके कारण यह भी अपेक्षा की जा सकती है कि जहां लड़कियों को 18 वर्ष की उम्र में अपने निजी अधिकार, शरीर से जुड़े निर्णय लेने की स्वच्छंदता मिल जाती थी, वहीं अब उन्हें शायद 21 वर्ष तक अपने माता पिता की इच्छानुसार कार्य करना पड़े। हालांकि यह भी देखने वाली बात होती है कि शादी के बाद वह कितना आजाद हो जाती हैं?

इस मामले में हैदराबाद से सांसद अस. दुद्दीन ओवैसी का कहना है कि 18 साल की लड़की जब वोट दे सकती है तो अपना पार्टनर क्यों नहीं चुन सकती? ओवैसी ने कहा कि आप सरकार हैं, मोहल्ले के चाचा या अंकल नहीं हैं कि आप फैसला करेंगे कि कौन कब शादी करेगा या क्या खाना खाएगा? सांसद शफीक उर रहमान बर्क ने सरकार के इस फैसले पर विवादित बयान दिया, जिसकी बड़े पैमाने पर आलोचना हुई और उन्हें महिला विरोधी तक बताया गया।

हमारा समाज महिलाओं की स्वतंत्रता को लेकर आज भी भ्रमित, उलझा और डरा हुआ है। आवश्यक है कि कोई निर्णय लेने से पहले उस समूह से बात की जाए जिसके लिए वो फैसला लिया जा रहा है। भारतीय समाज में रूढ़िवाद की जड़ें हमारी कल्पना से कहीं ज्यादा गहरी हैं। अभी इन्हें पूरी तरह शायद ही निकाला जा सकता है, लेकिन परिवर्तन के चक्र में इनकी गांठों को खोल कर नई सुबह में खिलने के लिए रखा जाना चाहिए, तभी बात बनेगी।

विज्ञान और पर्यावरण को आम भाषा में लोगों तक पहुंचाएं

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार ने विज्ञान प्रसार के सहयोग से सर्टिफिकेट कोर्स कराया, 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया

आरएलए समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत में ऐसे प्रशिक्षित विज्ञान पत्रकारों की आवश्यकता है, जो विभिन्न मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से विज्ञान और पर्यावरण से जुड़े तथ्यों और मुद्दों को आम भाषा में जनता तक पहुंचा सकें। इसी को ध्यान में रखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने विज्ञान प्रसार के संयुक्त तत्वावधान में एक सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया। 'विज्ञान और पर्यावरण संचार के लिए अनिवार्य कौशल' विषय पर आयोजित इस कोर्स में दिल्ली विवि के 100 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। कोर्स के दौरान विद्यार्थियों को हर सप्ताह ऑनलाइन पढ़ाया गया और परियोजना कार्य भी दिया गया।

कोर्स के दौरान विद्यार्थियों को विज्ञान और पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं, मुद्दों और उनके बारे में आम भाषा में प्रभावी ढंग से संवाद करने का कौशल सिखाया गया. कोर्स के पाठ्यक्रम को विज्ञान और पर्यावरण के विषयगत क्षेत्रों जैसे विज्ञान, पर्यावरण व संचार, कहानी सुनाने की तकनीक, मीडिया उत्पादन के उपकरण या तकनीक, परियोजना और प्रस्तुति के आधार पर व्यावहारिक विश्लेषण के साथ कवर किया गया।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक पहल, वैज्ञानिक सफलताओं, प्राकृतिक आपदाओं, मौसम पूर्वानुमान, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, स्वास्थ्य और पर्यावरण के बारे में संवाद करने के लिए विज्ञान और पर्यावरण संचार कौशल में विद्यार्थियों को उन्मुख करना था। विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ. नकुल पाराशर का मानना है कि विज्ञान और पर्यावरण संचार समय की मांग है। चाहे लैब में हो रहे वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास कार्य हों या इसरो के

'विज्ञान और पर्यावरण संचार के लिए अनिवार्य कौशल' विषयक कोर्स का पोस्टर महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. राकेश कुमार आदि ने जारी किया।

अंतरिक्ष मिशन, जल, प्रदूषण, प्राकृतिक आपदा, ऊर्जा, कृषि, मौसम, नई तकनीक, मशीन लर्निंग आदि हर जगह विज्ञान और पर्यावरण पत्रकारिता की आवश्यकता है। विज्ञान को जमीनी स्तर पर ले जाने के लिए युवाओं को प्रशिक्षित करने की जरूरत है। इसे विज्ञान संचार के राष्ट्रीय एजेंडे में भी शामिल किया गया है।

कोर्स की शुरुआत के समय पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने कोर्स की महत्ता पर प्रकाश डाला तो प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने भावी पत्रकारों को कोर्स का लाभ उठाने को प्रोत्साहित किया।

अनुवाद का महत्व समझें विद्यार्थी

आरएलए समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से 30 सितंबर 2021 को राष्ट्र के बहुमुखी विकास का मूलमंत्र विषय पर एक वेबिनार आयोजित किया गया। वेबिनार की शुरुआत महाविद्यालय के हिंदी विभाग के शिक्षक प्रोफेसर संजय कुमार शर्मा ने की, जो इस वेबिनार के संयोजक भी थे।

प्रो. संजय कुमार शर्मा ने आयोजन की रूपरेखा रखते हुए मुख्य वक्ता दिल्ली विवि के हिंदी विभाग के प्रो. पूरन चंद टण्डन को आमंत्रित किया। प्रो. टण्डन ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस हर साल 30 सितंबर को मनाया जाता है। इससे दुनिया भर में अनुवाद समुदाय की एकता को बढ़ावा मिलता है।

प्रो. टण्डन ने देश की हिंदी भाषा को सहयोग करने की बात कही। उन्होंने बताया कि भले ही प्रतिस्पर्धा ने अंग्रेजी भाषा को चुना हो परंतु इसे काफी कम लोग ही जानते हैं। भारतीय मूलमंत्र हिंदी व संस्कृत भाषा से ही निकले हैं। आज पूरे विश्व के विद्यार्थी हमारी हिंदी भाषा और संस्कारों को जानने के लिए देश का रुख कर रहे हैं। उन्होंने आज के समय में अनुवाद का महत्व बताते हुए कहा कि कॅरिअर बनाने वाले विद्यार्थी अगर दो या तीन भाषाओं का ज्ञान कर लें तो उनके सामने अवसरों की कमी नहीं होगी।

'रोग प्रतिरक्षा बढ़ाएं–बीमारी को रोकें' का संदेश दिया

आरएलए समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की योगा और मेडिटेशन सोसाइटी की ओर से शारीरिक विभाग के सहयोग से समग्र स्वास्थ्य–'रोग प्रतिरक्षा बढ़ाएं और बीमारी को रोकें' विषय पर 2 दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला 7वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 23 और 24 जून 2021 को जूम प्लेटफॉर्म पर हुई।

कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों के योग और शारीरिक फिटनेस विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। प्रथम दिन की शुरुआत प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता के स्वागत के साथ हुई। पहले सत्र के वक्ता डॉ. राकेश तोमर थे, जिन्होंने व्यक्ति के समग्र विकास और अच्छी रोग प्रतिरक्षा बनाए रखने के लिए शारीरिक व्यायाम का महत्व बताया। डॉ. तारक नाथ प्रमाणिक ने विभिन्न प्रकार के योग अभ्यासों के बारे में जागरूक करते हुए विभिन्न आसनों के बारे में बताया। सत्र के अंतिम वक्ता डॉ अजय शास्त्री ने योगिक और

आयुर्वेदिक आहारों का पालन करने पर जोर दिया और इससे संबंधित लाभों पर चर्चा की।

कार्यशाला के दूसरे दिन की शुरुआत शारीरिक विभाग के डॉ. प्रदीप कुमार ने की। उन्होंने आयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र के पहले वक्ता बृजेश सिंह ने श्वास और ध्यान विज्ञान पर बात करते हुए बताया कि नियमित अभ्यास करने से लाभ उठाया जा सकता है।

प्रिया जोशी ने महामारी के समय में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाई। उन्होंने पैटर्न और संगीत की मदद से सांस लेने के विभिन्न तरीकों को भी साझा किया। दिन का मुख्य आकर्षण एक पैनल चर्चा थी, जिसमें सभी सम्मानित वक्ताओं ने भाग लिया। पैनल चर्चा में प्रतिभागियों ने अपने विचार और विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी शंकाओं को साझा किया।

ऑनलाइन कार्यशाला में विभिन्न संस्थानों के शिक्षकों, छात्रों और योग चिकित्सकों सहित विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के लिए 230 पंजीकरण प्राप्त हुए और इसमें 110 लोगों ने भाग लिया।

साइबर क्राइम से बचने के गुर सीखे

आरएलए समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। कॉमर्स विभाग ने आइक्यूएसी सेल के सहयोग से 5 अक्टूबर 2021 को 'भारत में साइबर अपराधः मोडस ऑपरेंडी, रोकथाम और सजा' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया। यह वेबिनार बच्चों को साइबर अपराध के बारे में अवगत कराने और बचने के तरीकों को बताने के उद्देश्य से किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. मेघ राज रहे, जो दिल्ली विवि में फैकल्टी ऑफ लॉ में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। इसके अलावा वेबिनार में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, आइक्यूएसी सेल की संयोजक प्रो. प्रेरणा दीवान मौजूद थीं. कार्यक्रम की शुरुआत कार्यक्रम सचिव राजेंद्र सिंह ने परिचय के साथ की।

इसके बाद प्राचार्य ने साइबर क्राइम और उसके बढ़ते प्रकोप के बारे में बताया कि जैसे जैसे तकनीक विकसित हो रही है, विश्व में साइबर क्राइम बढ़ता जा रहा है। इससे बचने के लिए हमें इसके बारे में पता होना चाहिए। हमें मालूम होना चाहिए कि हम इससे कैसे बच सकते हैं।

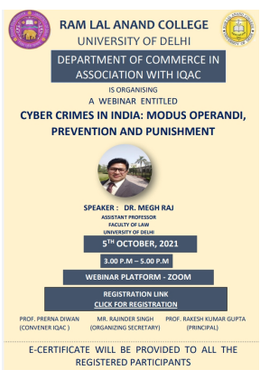

मुख्य वक्ता डॉ. मेघ राज ने सभी को पांच स्थितियों से अवगत कराया। उन्होंने पांच अलग–अलग तरीकों से साइबर क्राइम का शिकार हुए लोगों की वारदातों का जिक्र किया। इसके अलावा उन्होंने साइबर क्राइम से संबंधित नागरिक अधिनियम से भी बच्चों को अवगत कराया। उन्होने विद्यार्थियों को इस अपराध की सजा दिलवाने की प्रक्रिया के बारे में भी बताया।

आयोजन के अंत में वेबिनार सचिव डॉ. राजेंद्र सिंह ने आयोजन में शामिल लोगों को धन्यवाद करते हुए मुख्य वक्ता का आभार जताया। वेबिनार में शामिल होने वाले सभी प्रतिभागियों को ई–सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

विशेषज्ञ ने बात रखी तो विद्यार्थियों ने पूछे सवाल

आरएलए समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारितावं एवं जन. संचार विभाग की ओर से 29 सितंबर 2021 को मीडिया शोध नामक विषय पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन किया गया। यह वेबिनार गूगल मीट के जरिए आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को मीडिया शोध के कौशल, अवसर और उसमें संभावनाओं से संबंधित जानकारी देना था। मीडिया शोध विषयक वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. धनंजय चोपड़ा को आमंत्रित किया गया था, जो सेंटर ऑफ मीडिया स्टडीज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कोर्स कोऑर्डिनेटर हैं। कार्यक्रम में विभाग के संयाजक प्रो. राकेश कुमार समेत विभाग के सभी शिक्षक मौजूद थे।

डॉ. धनंजय चोपड़ा ने मीडिया शोध का महत्व बताते हुए विद्यार्थियों को इस विषय पर विस्तार से समझाया। साथ ही अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके उज्ज्वल भविष्य की राह दिखाई। अंत में विद्यार्थियों ने उत्सुकता दिखाते हुए अपनी कई तरह की शंकाएं रखीं, जिसका संबंधित वक्ता ने जवाब दिया। अंत में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने डॉ. चोपड़ा सहित सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

एनसीसी ने चलाया कोविड जागरूकता अभियान

आरएलए समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस और आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में राम लाल आनंद महाविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस स्वयं सेवकों ने कोविड टीकाकरण जागरूकता अभियान चलाया। इस अभियान के पीछे प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता का प्रोत्साहन था।

इसकी शुरुआत डॉ. रीता जैन और कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर की। यह अभियान दक्षिण मोती बाग के शास्त्री नगर बस्ती में चलाया गया। शिविर का उद्देश्य भारत सरकार की ओर से शुरू किए गए कोविड–19 टीकाकरण अभियान के बारे में लोगों को जागरूक करना था। एनसीसी और एनएसएस ने मिलकर कोविड–19 टीकाकरण पर एक सर्वेक्षण भी किया। एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस स्वयं सेवकों ने बस्ती के क्षेत्र में स्थानीय लोगों के साथ संवाद किया और उन्हें टीका लगवाने और सार्वजनिक स्थानों पर मास्क पहनने के लिए प्रेरित किया।

सर्वेक्षण से पाया गया कि जागरूकता की कमी के कारण बहुत से लोग टीकाकरण के लिए अनिच्छुक थे। कैडेट्स ने लोगों को टीका लगवाने के लिए प्रासंगिक जानकारी और माध्यमों से अवगत कराया और टीकाकरण से होने वाले लाभ बताकर उन्हें प्रेरित किया। एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस स्वयं सेवकों ने लोगों को पंजीकृत होने के लिए ऑनलाइन सरकारी पोर्टलों का उपयोग करना भी सिखाया। अभियान के दौरान लोगों को ज्ञानवर्धक पोस्टर भी दिखाए गए, जिसके माध्यम से लोग स्थानीय स्तर पर स्थिति की पहचान कर सकेंगे और सक्रिय कदम उठाए जा सकेंगे, जिनका उपयोग बेहतर निर्णय लेने के लिए किया जा सकता है। जागरूकता अभियान से लोगों को यह समझने में मदद मिली कि टीका लगवाना कितना महत्वपूर्ण है।

गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि का स्वागत प्राचार्य प्रो.राकेश कुमार गुप्ता और शिक्षकों ने किया।

हिमांशु के नाम रहा पहला पुरस्कार

नई दिल्ली। हिंदी रचनात्मक लेखन समिति अभिव्यक्ति ने सत्र 2021–22 में अनेक गतिविधियों का आयोजन किया। इसमें 14 अगस्त को आजादी के अमृत महोत्सव और स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अंतर महाविद्यालय काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देश प्रेम पर 45 प्रतिभागियों ने कविताएं सुनाई। इसी कड़ी में 28 अक्टूबर 2021 को आशु लेखन प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया, जिसमें किसी एक कहानीकार की पंक्ति का चुनाव कर अपनी रचना लिखनी थी। दिल्ली विवि के कई कॉलेज के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इसमें से निर्णायक मंडल ने तीन श्रेष्ठ कहानियों को पुरस्कृत करने का फैसला किया। प्रथम पुरस्कार राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिमांशु, द्वितीय पुरस्कार मोतीलाल नेहरू कॉलेज के अभिषेक सुमन और तृतीय पुरस्कार स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज के योगेश सिंह को दिया गया।

एसएसबी की तैयारी कैसे करें, कैडेट्स ने जाना

आरएलए समाचार ब्यूरो

नई दिल्ली। महाविद्यालय के एनसीसी कैड्टस के भविष्य को ध्यान में रखते हुए एसएसबी की तैयारी करने के सही टिप्स जानने के लिए वेबिनार आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य कैड्टस को एसएसबी की जानकारी और प्रक्रिया से परिचित कराना था। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में आरएलए एनसीसी के कैडेट रहे उज्ज्वल शर्मा को आमंत्रित किया गया, जिनका एसएसबी इंटरव्यू निकल चुका है।

वेबिनार की शुरुआत उज्ज्वल शर्मा के स्वागत से हुई। तत्पश्चात एसएसबी की 5 दिवसीय लंबी प्रक्रिया को समझाने के लिए वक्ता ने पीपीटी और अपने व्यक्तिगत अनुभव का सहारा लिया। इसी कड़ी में उन्होंने स्क्रीनिंग टेस्ट, साक्षात्कार और लिखित परीक्षा की तैयारी के टिप्स और ट्रिक्स भी साझा किए। तैयारी के दौरान काम के प्रबंधन पर बात की। अंत में कई कैड्स ने प्रश्न और शंकाएं साझा की जिनका उत्तर उन्होंने दिए। वेबिनार में एएनओ कैप्टन प्रो. संजय कुमार शर्मा ने उज्ज्वल को ओटीए में शामिल होने की बधाई देते हुए वेबिनार का समापन किया।

फेयरवेल में दिखी संस्कृतियों की झलक

सुमित कुमार/इमरान जफर

नई दिल्ली। कोरोना के लम्बे दौर के बाद दिल्ली विवि और उसके कॉलेज खुले तो विद्यार्थियों ने राहत की सांस ली। दो महीने क्लास करने के बाद जब सेमेस्टर का अंत आया तो उनका मन फेयरवेल और मस्ती के लिए हिलोर मारने लगा। उनकी यह मस्ती स्वाभाविक भी है, क्योंकि दो साल बाद आखिरकार कॉलेज में धूमधड़ाका आयोजन हो रहा है, जिसका उन्हें लम्बे समय से इंतजार था। ऐसा ही फेयरवेल आयोजन 6 मई 2022 को दिल्ली विवि के रामलाल आनंद कॉलेज में हुआ। इसकी शुरुआत में हुई कुछ प्रस्तुतियों में देश के कई राज्यों की झलक दिखी तो प्राचार्य प्रो राकेश कुमार गुप्ता के सम्बोधन में आने वाले कल के लिए एक रूपरेखा देखने को मिली।

समारोह में जूनियर विद्यार्थियों ने नृत्य और गायन से लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम की शुरुआत शाम पांच बजे प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के अभिभाषण से हुई। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देकर महाविद्यालय का मान बढ़ाने के लिए 2022 बैच के छात्रों का आभार व्यक्त किया और कहा कि यह बैच महाविद्यालय का सबसे प्रिय बैच रहा। उन्होंने यह भी कहा कि वह उम्मीद करते हैं कि सभी विद्यार्थी रामलाल आनंद कॉलेज, दिल्ली विवि का नाम अपने रिज्यूम में गर्व के साथ लिखेंगे। उन्होंने सूचना दी कि आने वाले कुछ दिनों में कॉलेज एलुमनाई सम्मेलन का आयोजन करेगा, जिसमें सभी तृतीय वर्ष के छात्र अपने सीनियर से मिलकर बातचीत कर सकेंगे और साथ ही विभिन्न कैरियर के अवसरों के बारे में जानेंगे।

तीन साल के कॉलेज जीवन के दौरान बिताए गए खूबसूरत पलों को संजोने के लिए विदाई पार्टी का आयोजन किया गया। इस खूबसूरत पल का जश्न मनाने के लिए कई सांस्कृतिक और मनोरंजक प्रस्तुतियां हुईं। कॉलेज की सिंगिंग सोसा. इटी 'दस्तूर' के सदस्यों ने अपनी मंत्रमुग्ध कर देने वाली आवाज और राब्ता 'आज जाने की ज़िद न करो, तुम से ही जैसे गीतों के शानदार चयन से समारोह में बैठे हर व्यक्ति का दिल मोह लिया।

तृतीय वर्ष के छात्र जुनैद क़ादरी ने कॉलेज में अपने अनुभव पर कविता सुनाई, जिससे मानो हर कोई कॉलेज में अपने दिनों के फ्लैशबैक में चला गया और फिर चारों तरफ माहौल भावुक हो गया। प्रस्तुतियों के बाद एक घंटे के डीजे धूमधड़ाका का सभी ने आनंद लिया। विद्यार्थी इस पल को पूरी तरह जी लेना चाहते थे. इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने के लिए सभी शिक्षक, कर्मचारी और स्टाफ पूरी तरह मुस्तैद रहा।

स्पिक मैके सोसाइटी दे रही भारतीय संस्कृति को बढ़ावा

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर काम करने वाली स्पिक मैके सोसाइटी युवाओं के बीच भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य करती है। आरएलएसी स्पिक मैके चैप्टर भी भारतीय संगीत और संस्कृति के लिए लगातार काम करता आ रहा है। 21 जून 2021 को विश्व योग दिवस के अवसर पर आरएलएसी स्पिक मैके चैप्टर के सदस्यों ने विभिन्न योग आसन करके योग को बढ़ावा दिया। सभी सदस्यों ने प्रतिदिन मिलकर योगासन का अभ्यास किया और तस्वीरों को सोशल मीडिया पर शेयर कर लोगों का जागरूक किया।

सोसाइटी ने जुलाई में इंस्टाग्राम सीरीज की शुरुआत की। इसमें सोसाइटी के

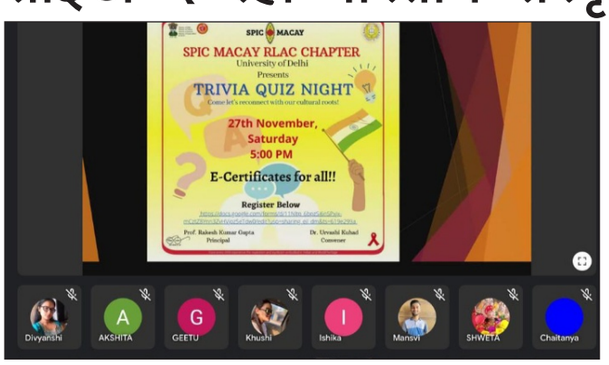

आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल पर सप्ताह में तीन बार विभिन्न राज्यों के संगीत और संस्कृति से जुड़ी वीडियो शेयर की जाती है। 'म्यूजिकल मंडे', 'वाल्ट्ज वेडनेसडे' और 'फोक फ्राइडे' नाम से चल रही इस सीरीज का मकसद भारत की समृद्ध संस्कृति के प्रति जागरूकता फैलाना है। यह सीरीज अभी भी जारी है। 24 सितंबर को पोषण माह के अवसर पर फोटोग्राफी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसका मकसद स्वदेशी और स्वस्थ व्यंजनों को बढ़ावा देना था। प्रतियोगिता के विजेता को 500 रुपए का पुरस्कार दिया गया। 7 दिसंबर को 2021 को पदाधिकारियों का गूगल मीट पर ऑडिशन किया गया। नए पदाधिकारियों ने ट्रिविया क्विज नाइट का आयोजन किया। इस आयोजन की थीम 'माई इंडिया–ए लुक ऑन द ग्रासरूट ऑफ डिफरेंट कल्चरल फॉर्म्स इन ऑल इंडिया' रखी गई थी। ट्रिविया क्विज के दौरान भारत के राज्यों, उनकी संस्कृति, संगीत और खानपान से जुड़े प्रश्न पूछे गए। सबसे ज्यादा सही उत्तर देने वाले प्रतिभागियों को ट्रिविया किंग' और 'ट्रिविया क्वीन' शीर्षक दिया गया।

आरएलए समाचार
संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो.राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
गीतू कत्याल
संपादकीय सहयोग
विकास त्रिपाठी, रश्मि समीरा, इमरान जफर